डॉ0 नामवर सिंह की प्रगतिवादी आलोचना

साधना ओझा

डॉ नामवर सिंह की आलोचना यात्रा पृथ्वीराज रासो से लेकर समकालीन साहित्य तक निरंतर गतिमान है। वे एक अन्वेशक और शोधार्थी की भाँति प्राचीन साहित्य की प्रगतिशीलता को खोजते और विश्लेषित करते हैं। मार्क्सवादी दृष्टि से समकालीन कविता व कहानी का मूल्यांकन, समसामयिक आलोचना के क्षितिज पर उनकी उपस्थिति को अपराजेय बनाता है। अलोचक के रूप में अपनी परंपरा को स्पष्ट करते हुए नामवर जी ने कहा है–''जैसे रचना के क्षेत्र में हर सार्थक रचनाकार कहीं न कहीं अपने लिए एक परंपरा ढूँढ़ता है चिंतन के क्षेत्र में भी अपने लिए एक परंपरा ढूँढ़ने की जरूरत आलोचक को महसूस होती है। हिन्दी में यह उल्लेखनीय बात है कि इस परंपरा को खेलने एवं ढूँढ़ने उससे अपने आप को जोड़ने का काम गैर मार्क्सवादी आलोचकों की अपेक्षा मार्क्सवादी आलोचकों ने ज्यादा किया है।''